आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 12 | उदयपुर बुधवार 01 जुलाई 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

चीन की अकड़ ढीली करने आर्थिक टेंटुआ कसना जरूरी

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

राहुल को जिस जानकार ने पट्टी पढ़ाई, उसे पता ही नहीं होगा कि 1996 में दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ था, जिसके अनुसार दोनों देशों के सैनिक वास्तविक नियंत्रण रेखा के दो किमी तक के क्षेत्र में जब भी जाएंगे, कोई हथियार उनके पास नहीं होगा।

भारत ने जितने फौजी खोए, उससे दुगुने चीन ने खोए। इस खबर ने भारतीयों के घावों पर मरहम जरुर लगाया। अब भारत 1962 के मुकाबले बहुत अधिक समर्थ है। वह चीन को अपनी हरकत का मजा चखा सकता है। चीन इस समय एशिया का सबसे बड़ा महाजन देश है।

यदि भारत उसका आर्थिक टेंटुआ कसवा दे तो उसकी अकड़ अपने आप ढीली पड़ जाएगी।

चीन के साथ भारत अब कैसा बर्ताव करे, इस सवाल पर भारत की जनता बड़ी असमंजस में हैं। भारतीय सैनिकों के शवों को जैसे ही उनके घरों पर पहुंचाया जा रहा है, उन्हें टीवी चैनलों पर देखकर करोड़ों भारतीयों का खून खौल रहा है लेकिन दूसरी तरफ वे यह भी देख रहे हैं कि सरकार के किसी नेता ने चीन के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला है। हां, प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री ने हमारे जवानों की शहादत पर दु:ख प्रकट किया है और कहा है कि उनकी कुर्बानी बेकार नहीं जाएगी।

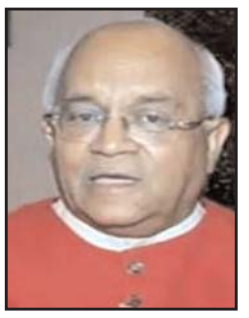

इस दु:खद अवसर पर घटिया राजनीति भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है। कांग्रेस के नेता प्रधानमंत्री पर सीधा प्रहार कर रहे हैं। वे पूछ रहे हैं कि मोदीजी कहां छिपे हुए हैं? वे कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं? इस सवाल के उठते ही प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्रियों की बैठक ही सैनिकों को श्रद्धांजलि से शुरु की और उनकी बहादुरी का गुणगान किया।

अब राहुल गांधी ने पूछा है कि मोदीजी बताएं कि उनके सैनिक चीनियों से लड़ने के लिए खाली हाथ कैसे चले गए? राहुल यह जानना भूल गए कि चीनी सैनिकों के हाथ में भी हथियार नहीं थे। वे भी खाली हाथ ही हमारे फौजियों से भिड़े थे।

दोनों तरफ के फौजियों ने डंडों, सरियों, कटीले तारों से लड़ाई की। राहुल को जिस जानकार ने पट्टी पढ़ाई, उसे पता ही नहीं होगा कि 1996 में दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ था, जिसके अनुसार दोनों देशों के सैनिक वास्तविक नियंत्रण रेखा के दो किमी तक के क्षेत्र में जब भी जाएंगे, कोई हथियार उनके पास नहीं होगा।

इस दु:खद घटना के घटने के बाद अभी तक इस बात का ठीक-ठीक पता नहीं चला है कि दोनों सैनिकों के बीच हाथापाई किस बात को लेकर हुई? चीन कहता है कि भारतीय सैनिक उसकी सीमा में घुसकर तोड़-फोड़ करने लगे थे और हमारे प्रवक्ता का कहना है कि चीनी सैनिक भारतीय सीमा में घुसकर दादागीरी कर रहे थे।

हमारी सरकार ने पहले बताया कि हमारे तीन सैनिक मारे गए लेकिन अब पता चला कि तीन नहीं, वे 20 थे। चीन के कितने सैनिक मरे, इसके बारे में प्रामाणिक जानकारी सामने नहीं आई है। चीन के बड़बोले अखबार 'ग्लोबल टाइम्स' ने कहा कि चीन नहीं बताएगा कि उसके कितने फौजी मरे। अपुष्ट सूत्रों से पता चला कि 40 चीनी सैनिक मारे गए और कई घायल भी हुए। भारत ने जितने फौजी खोए, उससे दुगुने चीन ने खोए। इस खबर ने भारतीयों के घावों पर मरहम जरुर लगाया।

आश्चर्य यह है कि भारत और चीन, दोनों की सरकारें इस मामले पर बहुत संयम का परिचय दे रही हैं बल्कि मैं यह कहूं तो गलत नहीं होगा कि दोनों सरकारें दबी जुबान से बोल रही हैं। भारत के विदेश मंत्री ने चीन के विदेश मंत्री से फोन पर बात की और उसके बाद दोनों ने एक-दूसरे के सैनिकों को वास्तविक नियंत्रण रेखा के उल्लंघन के लिए जिम्मेदार ठहराया लेकिन दोनों ने कहा कि इस मामले को तूल नहीं देना है। इस मामले को शान्तिपूर्वक हल करना है। यहां एक अन्य तथ्य पर भी ध्यान देना जरुरी है। जिस रात यह हत्याकांड हुआ, उसके कुछ घंटे बाद ही दोनों देशों के फौजी अफसर सुबह 7.30 बजे बैठकर आपस में बात करते रहे।

इससे आप क्या नतीजा निकालते हैं? इससे क्या यह अंदाज नहीं लगता कि दोनों तरफ के फौजियों में यह भिड़ंत अचानक हो गई और दोनों देशों के नेताओं को इसकी खबर बाद में लगी होगी। यदि यह अनुमान सत्य है तो फिर भारत सरकार का जो रवैया है, वह काफी संयमपूर्ण है।

लेकिन यदि ऐसा है तो मुझे आश्चर्य है कि नरेंद्र मोदी ने उसी दिन (16 जून) चीन के राष्ट्रपति शी चिन फिंग से फोन पर बात क्यों नहीं की? यदि वे अपनी मित्र को सारे तथ्य बताते तो हो सकता है कि वे अपने फौजियों की गलती स्वीकार करते और उस पर पश्चाताप भी व्यक्त करते।

ऐसा नहीं हुआ, यह चिंता का विषय है। जाहिर है कि विपक्ष अब 56 इंच के सीनेवाली सरकार की आलोचना करेगा। चीन की गद्दारी, दुष्टता, अहंकार, मित्र-द्रोह, महत्वाकांक्षा आदि के अनगिनत किस्से उठाएं जाएंगे और लोग मांग करेंगे कि चीन से बदला लिया जाए।

इसका अर्थ यह हुआ कि चीन को सबक सिखाया जाए। कोई छोटा-मोटा युद्ध भी हो जाए तो हो जाए। अब भारत 1962 के मुकाबले बहुत अधिक समर्थ है। वह चीन को अपनी हरकत का मजा चखा सकता है। मैं सोचता हूं कि यह दृष्टिकोण अतिवादी है। सबसे पहले भारत सरकार को अपने कूटनीतिक-स्त्रोतों से पता करना चाहिए कि गालवान घाटी की घटना क्या चीन के शीर्ष नेताओं के इशारों पर हुई है? यदि ऐसा हुआ है तो फिर भारत को चीन के प्रति अपनी नीति में आमूल-चूल परिवर्तन करना होगा।

चीन के साथ अपने हर प्रकार के सम्बन्धों पर पुनर्विचार करना होगा। सबसे पहले उसके लगभग 90 बिलियन डॉलर के व्यापार को तेजी से घटाना होगा। उसके 26 बिलियन डॉलर के विनियोग को निरस्त करना होगा।

तिब्बत, हांगकांग, ताइवान और सिंक्यांग के उइगर मुसलमानों के मुद्दों को फिर से जीवंत बनाना होगा। भारत को उन सब क्षेत्रीय संगठनों में एस.सी.ओ., ब्रिक्स और आर.आई.सी.- जिनका चीन भी सदस्य है, प्रखरता से चीन-विरोधी रवैया अपनाना होगा। यदि चीन अरुणाचल को खुद का बताता है तो हम तिब्बत, सिंक्यांग, इनर मंगोलिया को आजाद करवाने का मोर्चा क्यों नहीं खोल दें?

यदि चीन अरुणाचलियों को वीज़ा नहीं देता है तो हम तिब्बत, सिंक्यांग और इनर मंगोलिया के हान चीनियों को वीज़ा देना बंद क्यों न कर दें? 'रेशम महापथ' की चीनी महत्वाकांक्षी योजना से हम अपने पड़ौसी देशों को बाहर रहने के लिए प्रेरित क्यों न करे? हम दलाई लामा को चीन की छाती पर फिर से सवार क्यों न कर दें? चीन इस समय एशिया का सबसे बड़ा महाजन देश है। यदि भारत उसका आर्थिक टेंटुआ कसवा दे तो उसकी अकड़ अपने आप ढीली पड़ जाएगी।

(लेखक, भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष हैं व कई बार चीन की यात्रा कर चुके हैं)

राष्ट्र गौरव महाराणा प्रताप को श्रद्धा-नमन

राणा की पद-धूलि उठाकर, मस्तक पर चन्दन करलो।
राष्ट्र देवता के चरणों में, झुको-झुको वन्दन करलो।।

– श्यामनारायण पाण्डेय

(डॉ. महेंद्र भानावत को 5 अप्रेल 1980 को लिखे गये पोस्टकार्ड से)

कोरोना के विरूद्ध लड़ाई में सरकारी संस्थाओं की भूमिका कम, हमारी और आपकी ज्यादा : सहाराश्री

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सहारा इंडिया के चेयरमैन सुब्रतरॉय सहारा ने हर भारतीय से अपील करते हुए कहा कि कोरोना के विरूद्ध लड़ाई में अब सरकारी संस्थाओं और स्वास्थ्यसेवी संस्थाओं की भूमिका कम और हमारी और आपकी भूमिका ज्यादा है। उन्होंने कहा कि हमारे सामने बेहद उलझे हुए हालात हैं जब कोरोना महामारी से निपटने के लिए लॉकडाउन का पहला चरण शुरू हुआ था तो हमारे सामने सूत्र वाक्य था लॉकडाउन का कड़ाई से पालन करना है और कोरोना को हराना है। उस समय पूरे देश में संक्रमित लोगों की संख्या छह-सात सौ थी। सबको उम्मीद थी कि लॉकडाउन समाप्त होने तक कोरोना पर काबू पा लिया जाएगा। अब जब चार चरण पूरा करने के बाद लॉकडाउन खुल गया है तो इस समय देश में संक्रमित लोगों की संख्या छह लाख के पास पहुंच रही है और हमारे सामने सूत्र वाक्य यह है कि हमें कोरोना के साथ रहना सीखना है यानी हमें कोरोना के साथ ही जीना है।

सहारा ने कहा कि जब लॉकडाउन लागू हुआ था तब डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, सफाईकर्मियों, पुलिसकर्मियों और कोरोना से लड़ने वाले सभी लोगों के बीच पूरा उत्साह दिखाई देता था लेकिन अब वह उत्साह जैसे ठंडा पड़ रहा है। इस समय सक्रंमित लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। संक्रमित व्यक्तियों और उनके तीमारदारों की दर्दनाक कहानियां रोज सामने आ रही हैं। अब लॉकडाउन को लेकर जो फैसले लिये गये उनकी भी आलोचना की जा रही है। यह सही भी है कि आर्थिक गतिविधियों को अधिक समय तक रोक कर नहीं रखा जा सकता। तो आज हमारे सामने स्थिति यह है कि कोरोना के तीव्र फैलाव के बीच हमें अपनी आर्थिक और सामाजिक गतिविधियां भी जारी रखनी हैं।

डॉक्टर्स डे पर डॉक्टर्स सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे.के. हॉस्पिटल उदयपुर में डॉक्टर्स डे पर वर्षभर में किये गये उल्लेखनीय सेवा-कार्यों के लिए डॉक्टरों का सम्मान किया गया। फैसिलिटी डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने कहा कि चिकित्सक धरती पर भगवान का अवतार होते हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है। इस बात को चिकित्सकों ने कोरोना काल में फिर से एक बार साबित कर दिया है। इस अवसर पर डॉक्टर्स ने नि:शुल्क हर्नियॉ चिकित्सा परामर्श शिविर आयोजित करने की घोषणा की जिसमें डॉ. सपन अशोक जैन नि:शुल्क परामर्श देंगे। डॉ. जैन ने बताया कि 8 जुलाई तक आमजन को नि:शुल्क परामर्श के साथ लैब व डायग्नोस्टिक जांचों पर 20 प्रतिशत की छूट दी जायेगी। इस दौरान स्पाईन क्लिीनिक का भी शुभारंभ किया गया। इसके तहत न्यूरो व स्पाईन सर्जन डॉ. अजीत सिंह व डॉ. अमितेन्दु शेखर मरीजों को परामर्श देंगे और लैब व डायग्नोस्टिक जांचों पर 20 प्रतिशत छूट दी जायेगी।

निसान इंडिया ने दिखायी बी-एसयूवी की झलक

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निसान इंडिया ने टैक्नोटलॉजी से लैस और स्टाइलिश बी-एसयूवी कन्सेप्ट की हैडलाइट्स तथा ग्राइल की पहली झलक जारी की है। बी-एसयूवी कन्सेप्ट को 16 जुलाई को ग्लोाबल हैडक्वाटर्स में पहली बार दुनिया के सामने पेश किया जाएगा। भारतीय बाज़ार के लिए पेश कॉम्पैक्ट बी-एसयूवी में निसान की खूबियों को समेटा गया है जो जबर्दस्त प्रोडक्ट्स तथा टैक्नोलॉजी के मेल से लोगों को सशक्त बनाने की भावना के अनुरूप है। निसान की कॉम्पैक्ट बी-एसयूवी को विव 2020-21 की दूसरी छमाही में लॉन्च करने की योजना है।

निसान की ग्लोबल एसयूवी की खूबियों पर आधारित और उन्नित टैक्नोलॉजी से सुसज्जित, नई कॉम्पैक्ट एसयूवी को आने वाले भविष्य की यात्राओं के मद्देनज़र तैयार किया गया है जिसमें सड़कों पर दमदार मौजूदगी दर्ज कराने वाला स्टाइलिश डिजाइन है।

कुंभलगढ़ अभयारण्य में दिखी दुर्लभ प्रजाति की तितली

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। दक्षिण राजस्थान में स्लॉथ बियर (भालू) पर शोध कर रहे उदयपुर अंचल के पर्यावरण वैज्ञानिकों ने एक नवीन प्रजाति की तितली को खोजा है। मेवाड़ के साथ ही राजस्थान में इस तितली को पहली बार देखा गया है।

उदयपुर में प्रवासरत इंटरनेशनल क्रेन फाउण्डेशन व नेचर कंजरवेशन फाउण्डेशन के पक्षी विज्ञानी डॉ. के. एस. गोपीसुंदर ने बताया कि प्रकृति संरक्षण फाउण्डेशन की पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. स्वाति किट्टूर और मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के शोधार्थी उत्कर्ष प्रजापति ने दक्षिणी राजस्थान के कुंभलगढ़ अभयारण्य में स्लॉथ बीयर की परिस्थिति पर शोध के दौरान दुर्लभ लाइलक सिल्वरलाइन नामक तितली को खोजा है। हल्के पीले रंग की इस दुर्लभ तितली को दोनों शोधार्थियों ने कुंभलगढ़ अभयारण्य की एक चट्टान पर धूप सेकते देखा। डॉ. स्वाति और उत्कर्ष ने तत्काल ही इसे चांदी की तितली की एक अजीब प्रजाति मानकर कई सारी तस्वीरें क्लिक की और वेबपोर्टल पर अपलोड की।

डॉ. गोपीसुंदर ने बताया कि वेबपोर्टल पर अपलोड करने के बाद देश के कई वैज्ञानिकों व तितली विशेषज्ञों ने उनसे संपर्क किया और बताया कि यह तितली की बहुत ही दुर्लभ लाइलक सिल्वरलाइन प्रजाति है। इस प्रजाति की खोज 1880 के दशक में की गई थी, और इसे बेंगलुरु में मात्र एक की संख्या में ही देखा गया था।

पर्यावरण वैज्ञानिक इस तितली प्रजाति को खोजने मात्र तक ही सीमित नहीं रहे अपितु उन्होंने इस तितली पर एक विस्तृत शोधपत्र भी तैयार किया जिसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की शोध पत्रिका 'जर्नल ऑफ थ्रेटण्ड टेक्सा' में 26 जून को प्रकाशित किया गया। इस शोध पत्र को संयुक्त रूप से डॉ. के. एस. गोपीसुंदर, डॉ. स्वाति किट्टूर, पक्षी विज्ञानी डॉ. विजय कोली तथा उत्कर्ष प्रजापति द्वारा तैयार किया गया जिसमें बताया गया कि यह प्रजाति पहले कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, अरुणाचलप्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब और भारत के उत्तरी राज्यों तथा पाकिस्तान के रावलपिंडी में बहुत कम संख्या में देखी गई थी।

शास्त्र की पहचान लोक से, दोनों एक-दूसरे से भरपूर

शास्त्र की पहचान लोक से होती है और सच तो यह है कि शास्त्र लोक की ही देन है। लोक और शास्त्र व्यवहार की दो पूरक धाराएं हैं और दोनों में से कोई भी एक धारा क्षीण होती है तो दूसरे से भरपूर हो जाती है। भारतीय लोक दृष्टि की एक और विशेषता है और वह है- ईश्वर का लौकिकीकरण। इस लौकिकीकरण में सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं राम।

लोक एक ऐसी संज्ञा है जिसकी व्याप्ति क्षितिज की तरह निस्सीम है। यह केवल मनुष्यों का समूह नहीं है, बल्कि उसमें सृष्टि के सभी चर व अचर सम्मिलित हैं।

लोक केवल अवधारणा मात्र नहीं है और न ही उसकी परम्परा ऐसी है जिसकी गति थम गई हो। वस्तुत: लोक निरंतरता का प्रतिमान और जीवन का अंग है तथा उसकी परम्परा की सामर्थ्य अद्भुत है। यह लोक निजत्व का लोक नहीं, समग्र का लोक है। लोक अपनेआप में अकेला नहीं है। उसमें कला, धर्म और साहित्य जैसे तमाम अनुशासन विद्यमान हैं। लोक आस्था, लोक मूल्य, लोक धर्म, लोक कला, लोक कौशल, लोक भाषा और साहित्य से लेकर लोक के चित्रांकन और शिल्प की परम्पराओं को विकसित किया है।

भारतीय लोक हमारे सुदीर्घ इतिहास का अमृत फल है। जो कुछ हमने सोचा, किया और सहा, उसका प्रकट रूप हमारा लोक जीवन है। लोक, राष्ट्र की अमूल्य निधि है। हमारे इतिहास में जो भी सुन्दर तेजस्वी तत्व है, वह लोक में कहीं न कहीं सुरक्षित है। हमारी कृषि, अर्थशास्त्र, ज्ञान, साहित्य, कला के नाना रूप, भाषाएं और शब्दों के भण्डार, जीवन के आनन्दमय पर्वोत्सव, नृत्य, संगीत, कथा, वार्त्ताएं, आचार-विचार सभी कुछ भारतीय लोक में ओत-प्रोत है।

लोक शब्द जनपद या ग्राम्य नहीं है बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियों में नहीं है। लोक की सच्ची व्यंजना देखना ही है। यह लोक कहीं से कहीं तक शास्त्र नहीं है और यह इतना उदार भी है कि इस लोक के भीतर से होकर लोकोत्तर की राह जाती है। वास्तव में शास्त्र की पहचान लोक से होती है और सच तो यह है कि शास्त्र लोक की ही देन है। लोक और शास्त्र व्यवहार की दो पूरक धाराएं हैं और दोनों में से कोई भी एक धारा क्षीण होती है तो दूसरे से भरपूर हो जाती है।

भारतीय लोक बड़ा प्राणवान है। यह निरन्तर संवादरत रहता है। वह प्रकृति से, गगन से, जल से और वायु से निरन्तर संवाद करता है। वह अपने समाज के प्रत्येक वर्ग से संवाद करता है जिसके कारण उसके स्पंदन कभी थमते नहीं।

पश्चिम के फोक का आशय यह है कि वह पीछे छूटा हुआ है और यह अनपढ़ लोगों की वाचिक परम्परा के रूप में स्वीकृत है लेकिन भारतीय लोक बड़ा प्राणवान है। उसके प्रवाह की धारा कहीं अवरूद्ध नहीं है। यह लोक व्यतीत नहीं है, बल्कि सदैव वर्तमान और सजीव है। यह लोक दृष्टि समग्रता की दृष्टि है तथा वैयक्तिकता का विसर्जन ही है इस लोकदृष्टि का सच्चा पर्याय।

भारतीय लोक दृष्टि में जो कला विद्यमान है वह अद्भुत है और इसके उत्कृष्टमत उदाहरण हैं अजंता के अंकन। अजंता के अंकन किए तो विरागी चितेरों ने लेकिन उनके चित्त में जो लोक बसा था, वह भित्तियों पर उतर आया। इन भित्तिचित्रों में भिक्षुक, ब्राह्मण, सैनिक, राजपरिवार, कंचुक, प्रतिहार, निरीह सेवक, क्रूर शिकारी, निर्दय वधिक, शान्त तपस्वी, साधु के वेश में धूर्त, कुलांगना और परिचारिकाएं दरशाई गई हैं। प्रेम, लज्जा, हर्ष, हास्य, शोक, भय, आश्चर्य, क्रोध, उत्साह, शान्ति, विरक्ति और चिन्ता के भाव इतने सजीव रूप में चितेरों ने अभिव्यक्त किये हैं कि वे कलाकारों के लिए आश्चर्य का विषय बन गए।

लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य अध्ययन के नहीं, जीवन के विषय हैं। भारतीय लोक दृष्टि की एक और विशेषता है और वह है- ईश्वर का लौकिकीकरण और इस लौकिकीकरण में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं राम। भोजपुरी लोकगीतों में राम के कृतित्व के न जाने कितने बिंब हैं।

आस्था का स्मारक इतना दिव्य और भव्य है कि हिमालय की भुजाएं भी उसके शीर्ष को नहीं छू सकतीं। लोक के प्राण उसी आस्था में बसते हैं जो सर्वस्वीकृत है। जो जीवन से जुड़कर उसके आचार का, व्यवहार का कर्ममय आख्यान करती है।

सांची के तोरणद्वार पर एक किसान का अपनी पत्नी के साथ खेत में हल जोतने का उत्कीर्णन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भले राज्याश्रय में ये भव्य शिल्प निर्मित हुए हों किन्तु वह लोकशिल्पी की आंखों में सदैव बसा रहा है, जिस लोक की वह देन था और यही कारण है कि उसने कभी अपनी छेनी की नोक से इस लोक के सुख-दु:ख को ओझल नहीं होने दिया।

- नर्मदाप्रसाद उपाध्याय
(परछाई का सच से साभार)

स्मृतियों के शिखर (102) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पगड़ी बांधक छाबदार भगवानजी

महाराणा मेवाड़ का राजघराना अपनी बहादुरी, पराक्रम और शौर्य के कारण पूरे विश्व में ख्यात रहा। उसकी शान-शौकत, शक्ति-साम्राज्य तथा सम्पदा-समृद्धि के अनेक घटना-प्रसंग तो कागज-मसि पर अंकित नहीं होकर आम जनजीवन की कण्ठ ओपमा ही बने हुए हैं। हिन्दुवां सूरज के रूप में उनका जनाधार श्वेत-कमल की तरह अण दागल ही बना हुआ है।

मेवाड़ की पहनावा संस्कृति के अनेक रूप, रंग एवं प्रकार प्रचलित रहे हैं। शरीर के विभिन्न अंगों में शीर्ष सिर ही व्यक्ति की मुख्य पहचान है। इसकी हिफाजत अनेक रूपों में हुई है। यहां उसकी सुरक्षा के लिए उस पर बंधनी के रूप में पाग अथवा पगड़ी का प्रचलन रहा है।

राजा-राणा और श्रेष्ठीजन ही नहीं, सामान्यजन में भी पगड़ी पहनने का रिवाज रहा। इससे सिर की सुरक्षा ही नहीं, सर्दी, गर्मी, विपरीत मौसम, धूल धक्कड़ तथा आपातकाल में रक्षा भी होती है। ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं।

इतिहास को टटोलें तो सिन्धु-सभ्यता के दौरान पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी अपने सिर पर पगड़ी से शोभित होती थीं। अलग-अलग समय-काल में पगड़ियों के प्रचलन के विविध तौर-तरीकों, रंगावलियों तथा सज्जा-भूषण के प्रसंग चौंकाने वाले हैं।

वीरांगनाएं युद्धभूमि में पगड़ी धारण कर शक्ति का जिस वीर भाव से प्रदर्शन करतीं, दुश्मनों को उनके होने का पता ही नहीं चलता और जब बाद में उनकी वीरता का बखान सुनने को मिलता तो वे उनके शौर्य और उत्सर्ग के साथ वहां की माटी को अपने मस्तक पर चढ़ा नमन किये भावाभिभूत होते लगते।

महाराणा के पहनावे में पगड़ी का विशेष महत्त्व रहता। तरह-तरह की रंगरंगीली पगड़ियों के साथ उन्हें और अधिक शोभती बनाने के लिए कई तरह के कीमती उपकरण-अलंकरण लगाते। एक से बढ़कर एक कीमती जेवर सजाते। इसके लिए अलग से अधिकारी तथा स्थान विशेष होता।

ऐसे ही एक भगवान दर्जी थे जो मेवाड़ राजघराने के पगड़ी बांधकों की परम्परा के अन्तिम अधिकारी रहे। उन्हें छाबदार कहते। उनके जिम्मे पगड़ियों के बहुमूल्य अलंकरण रहते। अलंकरण तथा अन्य साजोसामान रखने की जगह नियुत रहती जो 'पाण्डेजी की ओवरी' कहलाती। जेवरों की कीमत लाखों-करोड़ों में होती।

भगवानजी ने तीन-तीन महाराणाओं की छाबदारी-सेवा की। इनमें महाराणा फतहसहिंजी, भूपालसिंहजी और भगवतसिंहजी थे। भगवानजी ने बताया कि एकबार गणगौर की सवारी के दौरान महाराणा की पगड़ी का छल्ला ढीला हो गया तब हाथी को रोककर भगवानजी ने टीप लगाकर छल्ला ठीक किया।

महाराणा भूपालसिंहजी ने सबसे पहले रियासतों में भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन किया। इस उपलक्ष्य में सरकार द्वारा उन्हें महाराज प्रमुख की पदवी प्रदान की।

इन्हीं भगवानजी ने अपने अन्तिम काल में भारतीय लोककला मण्डल में अपनी सेवाएं दीं। यह वह समय था जब मैं भी कलामण्डल में था। यहां मैंने समय-समय पर उनसे बहुत सारी जानकारियां प्राप्त कीं और तब अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लिखा भी। 'संस्कृति के रंग' नाम से जब 1979 में कलामण्डल से पुस्तक प्रकाशित की उसमें भी 'पगड़ी : लाख-लाख की' नाम से लिखा।

भगवानजी बड़े सहज तथा साधारण व्यक्तित्व लिये थे। उनकी बोलीचाली में राजघराने में रहते उपयोग में ली जाने वाली संस्कारी बोली थी। उम्र के ढलते उनके दोनों हाथ कांपने लग गये थे। गर्दन भी हिलने लग गई थी तब भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और वे अपनी लाल बखेरमा पगड़ी, धोती, कोट में ही आते और पूरे समय सिलाई के कार्य में लगे रहते।

भगवानजी को प्रतिदिन साइकिल पर लाने-ले जाने का जिम्मा उनके पुत्र प्रेमप्रकाश के जिम्मे था। प्रेमप्रकाश (65) ने बताया कि पिताजी का 92 वर्ष की उम्र में सन् 1985 में निधन हुआ। कलामण्डल में लगभग दस वर्ष उनकी सेवाएं रहीं।

यह अच्छी बात है कि प्रेमप्रकाश ने अपने पिताश्री से मेवाड़ में चली आ रही विविध जागीरदारों, ठिकानेदारों, सामन्तों की पगड़ियां बांधने में दक्षता प्राप्त करली। इस परम्परा को जारी रखते उन्होंने अपने पुत्र अजयकुमार (26) को भी इस कला में प्रवीण कर दिया है।

भगवानजी ने बताया कि महाराणा उदयसिंह (1541-72), महाराणा अमरसिंह द्वितीय (1700-16), महाराणा अरसीसिंह (1762-72), महाराणा भीमसिंह (1778-1828) तथा महाराणा स्वरूपसिंह (1842-61) ने अपने नाम से क्रमशः उदयशाही, अमरशाही, अरसीशाही, भीमशाही तथा सरूपशाही नामक पगड़िया प्रचलित कीं।

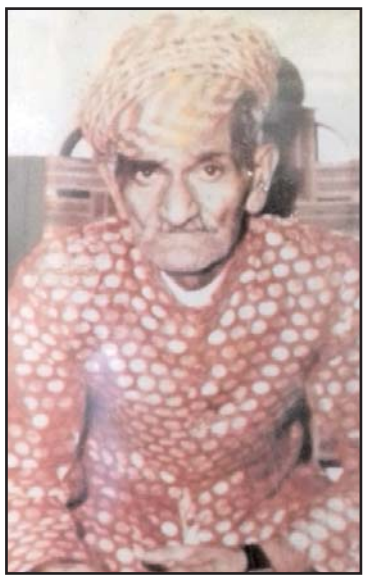

इसके अतिरिक्त मेवाड़ के कुछ विशिष्ट ठिकानों ने भी अपनी विशिष्ट पगड़ियां चलाईं, जिनमें सलूम्बर की चूण्डावतशाही, देवगढ़ की जसवन्तशाही, कानोड़ की मंडपशाही, बदनौर की राठौड़ी तथा भैंसरोड़गढ़ की मानशाही नामक पगड़ियां उल्लेखनीय हैं। इन सभी पगड़ियों में अमरशाही पगड़ी का सर्वाधिक प्रचार रहा। मेवाड़ की प्रारम्भिक पगड़ी खिड़कीदार थी। यह पगड़ी कपड़े की इमली पर बांधी जाती है। इसमें पूरे सिर को ढकने वाला रूई का 'खग' रहता है। यह खग चोट आदि से सिर का बचाव करता है। महलों में महाराणा 'बखरमा' पगड़ी बांधते थे।

उदयशाही पगड़ी में खग एक बाजू रहता है जिसमें जरी लगाई जाती है। इस पर तीन पछेवड़ियां और चन्दरमा बांधा जाता है। अमरशाही में पीछे एक पासा और बीच में जरी रहती है। इस पर दो पछेवड़ियां बांधी जाती हैं। खग में किरण और मोतियों की लड़ लगाई जाती है। इसके अतिरिक्त जड़ाऊ चन्दरमा, जड़ाऊ सरपेच तथा जड़ाऊ मोतियों की कलंगी और लटकन होती है। अरसीशाही पगड़ी में खग ऊपर निकला हुआ तीखा रूईदार होता है। इसके अन्दर आटों में रूई रहती है। इस पर तीन पछेवड़ियां तथा चन्दरमा, सरपेच, कलंगी, लटकन आदि सब जड़ाऊ होते हैं। भीमशाही का खग मोटा तथा तोते की चोंच सा निकला एक तरफ झुका होता है। इसके सामने के आंटे बंटदार होते हैं।

सरूपशाही पगड़ी रूई की दो इमलियों पर बांधी जाती है। इसके खग और बीच के पासे में जरी लगती है। आग्या खाली रहता है। इस पर दो पछेवड़ियों बांधी जाती हैं। पछेवड़ियों के बीच जड़ाऊ पर सर; सर एवं पछेवड़ियों के ऊपर चन्दरमा। खग के ऊपर किरण और मोतियों की लड़। लटकन तुर्रा आदि मोतियों का जड़ाऊ। प्रारम्भ में इसे उमरावों के अतिरिक्त कोई भी बांध नहीं सकता था।

मानशाही पगड़ी बंटदार होती है। इसमें इमली नहीं रहती है। ठेठ तक गुम्बजनुमा आंटे चलते रहते हैं। चूण्डावतशाही में कपड़े की इमली, तीन पासे, पासों तथा सर पर जरी। आग्या सामने। तीन पछेवड़ियां, चन्दरमा, किलंगी, लटकन आदि सब जड़ाऊ होते हैं। जसवंतशाही बिना इमली की पगड़ी होती है। इसमें पगड़ी का ही खग निकाला जाता है। राठौड़ी पगड़ी का बंधेज बायां होता है। मंडपशाही में तीन पासे होते हैं जिनमें जरी लगाई जाती है। इसका आग्या बाजू पर रहता है।

ये पगड़ियां विशेष उत्सवों पर धारण की जाती थीं। इनमें अमरशाही पगड़ी सबसे छोटी केवल बारह हाथ की होती है। शेष पगड़ियां बीस-बीस हाथ की होती हैं। महाराणा सज्जनसिंहजी अपनी पगड़ी पर अधिक वेशकीमती जेवर धारण करते थे। महाराणा भूपालसिंहजी भी अपनी पगड़ी पर हीरे का चन्दरमा तथा सरपेच धारण करते थे। खग के दोनों तरफ मोतियों की लड़ रहती थी। पूरी पगड़ी पर डेढ़-डेढ़, दो-दो लाख का जेवर चढ़ता था। वे प्रतिदिन नई पगड़ी धारण करते।

इन महाराणाओं के पगड़ी बांधने वाले जो व्यक्ति होते, पगड़ी का सारा जेवर भी उन्हीं के पास रहता था। ये छाबदार कहलाते थे। 70 वर्षीय भगवानजी ने महाराणा फतहसिंहजी, भूपालसिंहजी तथा भगवतसिंहजी के पगड़ियां बांधी।

इनसे पूर्व इनके पिता शोभालालजी, दादा मोतीलालजी, पड़दादा अंबावजी तथा अमरचन्दजी हुए जो पगड़ियां बांधने का काम करते थे। भगवानजी प्रत्येक प्रकार की पगड़ी बांधने के कुशल कारीगर थे। उनकी बंधी कई पगड़ियां विदेशी संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही हैं। उदयपुर के सुप्रसिद्ध प्रताप संग्रहालय में लगभग सौ पगड़ियों का संग्रह है।

इनमें से अधिकांश पगड़ियां उन्हीं की बांधी हुई हैं। मुगल बादशाह शाहजहां की वह पगड़ी भी यहां सुरक्षित है जिसे उसने यहां के जगमन्दिर में महाराणा कर्णसिंहजी के पगड़ीबंध भाई के रूप में धारण की थी।

आदमी की पहचान भी पगड़ी से ही होती थी। पगड़ी की करामात के अनेक किस्से जनसाधारण में तथा इतिहास में मिलते हैं। केशरिया बाने के साथ तो केशरिया पगड़ी का महत्त्व विश्व-प्रसिद्ध ही है। विशिष्ट संस्कारों पर पगड़ी और जामदानी का कपड़ा दिये जाने की प्रथा रही है। किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने के पश्चात पगड़ी बांधने का नुगता किया जाता है। तब उत्तराधिकारी को पगड़ी धारण कराई जाती है। पहले ठिकाने में किसी जागीरदार की मृत्यु हो जाने पर महाराणा स्वयं उत्तराधिकारी के पगड़ी बंधाकर तलवार बंधी की रस्म पूरी करते थे।

किसी की मृत्यु पर शोकसूचक सफेद पगड़ी धारण की जाती है। तेरहवें दिन पगड़ी का रंग बदले जाने का विशेष संस्कार किया जाता है, जिसमें सफेद पगड़ी के स्थान पर रंगीन पगड़ी धारण कराई जाती है। निःसंतान व्यक्ति को करारा ताना मारने के लिए 'उसकी पगड़ी खूंटी टंगी हुई है' कहा जाता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु पर होने वाले भोज में पुरुषों को आमंत्रित करने के लिए 'पगड़ी बंध नूता' दिया जाता था।

शादी के लिए जाने के पूर्व वर के पाग बंधाई की रस्म पूरी की जाती थी। इस दस्तूर में सर्वप्रथम जंवाई की पाग के आंटे दिलवाये जाते थे। यह दस्तूर एक से अधिक जंवाई होने पर सभी जंवाइयों से कराया जाता और सभी को नेगचार के रूप में हैसियत के अनुसार एक रूपये से लेकर पच्चीस रूपये तक दिये जाते थे।

नेगचार पूर्ण होने पर आखिर में किसी अच्छे पगड़ी बांधने वाले से पूरी पगड़ी बंधाई जाती जिसे पछेवड़ी, चन्दरमा तथा छोगे लुमक से सजा दी जाती। चौथे फेरे में दूल्हे को उसकी सुसराल की ओर से पगड़ी बंधाई जाती।

इसी प्रकार की एक पगड़ी तोरण पर तथा एक वर को विदाई देने पर बंधाई जाती जो क्रमशः तोरण के माथे की तथा आखे खेणे की पगड़ी के नाम से प्रसिद्ध रही। ब्याईजी को सीख देने तथा न्यौता दिलाने जाते समय भी पगड़ी बंधवाई जाती। मामा की ओर से अपने भाणेज दूल्हे के लिए लाए गए मुस्यारे-मुकलावे में झग्गापाग रखा जाता। इसी प्रकार का झग्गापाग वधू पक्ष की ओर से दी जाने वाली पैरावणी में भी दिया जाता।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 जून 2020

सम्पादकीय

पुस्तकें पाठकों की धरोहर

विगत दो-चार वर्षों से जो पुस्तकें छप कर आ रही हैं उनके पृष्ठ खुलते ही हमारा ध्यानाकर्षण करने वाली इस हिदायत पर जाता है-

''इस पुस्तक अथवा पुस्तक के किसी अंश को इलैक्ट्रोनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपी, रेकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक अथवा लेखक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।''

एक तरफ तो कहा जा रहा है कि पाठक संख्या बहुत कम हो रही है ऐसी स्थिति में किताबों का मार्केट ही डाउन हो गया है। प्रकाशक भी बहुत कम पुस्तकें छापकर काम चला रहे हैं और दूसरी ओर ऐसी हिदायत जब पढ़ने को मिलती है तो मन में कई प्रश्न उभरते हैं।

कहा तो यह भी जा रहा है कि बहुत कम किताबें ऐसी हैं जो आम पाठक के लिए उपयोगी हैं। अधिकतर काव्य-पुस्तकें छपती हैं जिनमें कविताएं नव प्रयोगवाद से लेकर अछन्दी और गड़बड़ छन्दी ही लगती हैं। जब इस बाबत् सम्बन्धित कवि-लेखकों से सवाल किया जाता है तो वे स्वयं माकूल उत्तर देने से कतराते हैं।

इससे लगता है कि नये कवि और पुराने कवियों में भी अपने ढंग से भिन्न अपनी छवि देने की ललक ही अधिक लगती है। वे प्रकाशक को थोड़ा बहुत पैसा दे देते हैं और बदले में कुछ पुस्तकें प्राप्त कर लेते हैं या फिर अपना स्वतंत्र प्रकाशन प्रारम्भ कर उसके बैनर तले पुस्तकें छाप देते हैं।

लेखकों का यह भी कहना है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे ऐसा क्यों करते हैं। इससे किसी पुस्तक का महत्त्व भी बढ़ता नहीं लगता और किसी को कोई हानि उठानी पड़ी हो, ऐसा भी सुनने में नहीं आया। प्रश्न है, कोई व्यक्ति पुस्तक किसके लिए छपवाता है, स्वयं के संतोष के लिए या फिर पाठकों के लिए? पाठक को निकाल दें तो किसी पुस्तक का क्या अर्थ रह जाएगा।

मानलें, एक फैशन के तौर पर भी कोई चीज प्रारम्भ होती लगती है पर यह तो है ही कि कोई पाठक किसी कृति को पढ़ता है तो उसका प्रभाव उसके मन-मस्तिष्क पर पड़े बिना नहीं रहता और यह भी कि हर रचनाकार प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी पूर्ववर्ती लेखक से प्रभावित होता ही है।

बहरहाल न पाठक ऐसी पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं, न पत्र-पत्रिकाएं ही उन पर समीक्षा देनी चाहती हैं। समीक्षक तो वैसे ही यह कहते सुना गया कि हर लेखक ठकुर सुहाती पढ़ना-सुनना-देखना चाहता है ऐसे में समीक्षक का वैसा दायित्व तो अब रहा ही नहीं लगता है।

कोरानो पर दो कविताएं

यह सब तो होना ही था

-पुष्पा कर्णावट-

जंगल कटे भूगर्भ दोहन,
शहर कंकरीट के जंगल बन गये।
बेतहाशा वाहनों का उत्सर्जन,
शुद्ध ओक्सिजन के लाले पड़ गये।
बढ़ते कार्बन डाई ऑक्साइड ने,
ओजोन परत को फाड़ दिया।
आगम वाक्य सत्य सिद्ध है,
पंचम आरे ने झण्डा गाढ़ दिया।
चीरहरण अरु खाली पेट पृथ्वी माता का,
घायल तन किस-किस को पाले।
मां के आंचल में अब दूध नहीं है,
रोटी के भी पड़ गए लाले।
रोटी नहीं हो तब झापड़ देकर,
बच्चों को पड़ता है सुलाना।
उसी तर्ज पर पृथ्वी माता ने,
अब कोरोना का लिया बहाना।
यक्ष प्रश्न है सबके मन में,
कोरोना का जिम्मेदार कौन है।
कृत करणी का यह परिणाम है,
फिर भी हम सब क्यों मौन हैं।
भौतिक संपदा की होड़ में मानव ने,
अपने पांव कुल्हाड़ी मारी।
चीन तो केवल निमित्त मात्र है,
उपादान के सिर पर है विपदा सारी।
अपने किये पाप कर्मों को,
अब अपने हाथों से ही है धोना।
यह सब तो था होना ही होना,
फिर कोरोना को क्यूं रोना।।

दायित्व बोध का यही वक्त

-प्रवीणा सिंघवी-

अचरज भरा था ये संसार।
इच्छा, तृष्णा थी जिसमें अपार।।
चल रही थी अंधी दौड़।
सबको करनी थी एक-दूजे से होड़।।
कचरे से पट गए नदी, तालाब, समंदर।
धुंए के गुबार से भरा था, सारा अंबर।।
गांव-घर सब सूने पड़े थे।
साथ रहकर भी सब अकेले खड़े थे।।
निज हाथों से मां का आंचल फाड़ दिया।
हो विवश प्रकृति ने,
कोरोना का अभिशाप दिया।।

'दोष किसे दें?' चलो!
हमने ये भेद दिया।
जिस थाली में खाया,
उसमें ही तो छेद किया।।
घरों में बन्द हुआ इंसान।
शहर-सड़कें हो गईं ज्यों श्मशान।।
बदलने लगा सारा मंजर।
सांस लेने लगे आसमां, समंदर।।
माना लॉकडाउन बड़ा सख्त है।
दायित्व बोध का यही वक्त है।।
आ गया नव निर्माण का क्षण।
मिटाना है असन्तुलन, यही है प्रण।।
नत होकर चरणों में, आओ करें प्रायश्चित।
हृदय विशाल है जननी का,
हो जाएं समर्पित।।

रामायण गाथाओं का इन्साइक्लोपीडिया बनेगा

अयोध्या (विज्ञप्ति)। योगी सरकार द्वारा पूरे विश्व में फैली भगवान राम से सम्बन्धित गाथाओं का इन्साइक्लोपीडिया बनाने का निर्णय लिया गया है। यह सौ खण्डों में तैयार होगा। देश के विभिन्न अंचलों में रामायण की प्रस्तुतियां और गाथा-रूप अलग-अलग एवं अनूठे हैं। इस प्रोजेक्ट के जरिये देश की युवा पीढ़ी को भगवान राम के चरित्र, आदर्श और उनकी यशगाथा को दस्तावेजों, तथ्यों एवं प्रमाणों को अनुसंधान के बाद पेश किया जाएगा ताकि कहीं से किसी को कोई संशय न रह जाए।

अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक वाई.पी. सिंह के मुताबित पांच साल के इस प्रोजेक्ट के लिए हाल ही में 60-60 लाख रूपये की मदद केन्द्र व राज्य सरकार ने दी है। शोध संस्थान रामायण देशों का समूह बनाने पर भी काम कर रहा है। इसमें दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य पूर्व एशिया, मिस्त्र, यूरोप, अमरीका, कैरेबियन अफ्रीका देश अध्ययन के दायरे में आयेंगे। इण्डोनेशिया, मलेशिया, थाईलैण्ड, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, वियतनाम, कम्बोडिया, लाओस, मारीशस, केन्या आदि देश ग्रुप ऑफ रामायण नेशन में शामिल होंगे।

आपात डिलीवरी कर बचाई शिशु व मां की जान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। शहर के पारस जे.के. हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने हाईरिस्क डिलीवरी कर शिशु व मां की जान बचाई है। सलूम्बर निवासी 6 माह की गर्भवती श्रीमती मुनीरा को गत दिनों रात में अचानक लेबर पेन शुरु होने पर हॉस्पिटल में स्त्री एवं प्रसुति रोग विशेषज्ञ डॉ. शीतल कौशिक को दिखाया गया जहां जाँच के बाद उसकी तुरंत डिलीवरी कराने का निर्णय लिया गया।

डॉ. कौशिक ने बताया कि महिला को बहुत तेज पेन होने पर रात्रि 2 बजे अस्पताल लाया गया। आगे होने वाले खतरे का अनुमान लगाते हुये उसकी आपातकालीन सिजेरियन डिलीवरी की गई। डिलीवरी मात्र 6 माह की थी। इस कारण बच्चे का वजन मात्र 800 ग्राम था जो कि एक स्वस्थ बच्चे से बहुत कम था। इस कारण बच्चे को हॉस्पिटल की नर्सरी में डॉ. राजकुमार विश्नोई के अंडर में रखा गया। डॉ. राजकुमार नियोनेटोलॉजिस्ट ने बताया कि बच्चे के फेफड़े पूर्ण विकसित नहीं थे जिस कारण उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। उसकी आंतें इतनी कमजोर थी, कि मां के दूध को पचा भी नहीं सकती थी। इस कारण उसे ट्यूब द्वारा कृत्रिम आहार टीपीएन दिया गया। धीरे-धीरे उसे डायरेक्ट फिडींग भी करवाई गई। मां को आई.सी.यू. में बुलाकर कंगारु केयर थैरेपी दी गई। बच्चे को 15 दिन तक वेंटीलेटर पर रखा गया। इस दौरान बच्चे का वजन बढ़ने लगा और वह खुद से फिडीग भी करने लगा। दो महीने के हॉस्पिटलाईजेशन के दौरान उसका वजन 2 किलो हो गया। इसके बाद जच्चा और बच्चा को छुट्टी दे दी गई।

डॉ. शर्मा एनएफडीपी के प्रदेश अध्यक्ष बने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। नेशन फस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी (एनएफडीपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कौशलेन्द्र नारायण ने उदयपुर निवासी ख्यातिलब्ध पत्रकार, कुशल प्रशासक, सह सम्मति प्रदाता व उच्च प्रतिष्ठित अतिथि प्राध्यापक डॉ. त्रिलोक शर्मा को सर्वसम्मति से एनएफडीपी

राजस्थान इकाई का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया है। यह जानकारी पार्टी के राष्ट्रीय संगठन प्रभारी राजीव लोचन पांडेय ने दी। 700 सौ से अधिक लेख और अनगिनत समाचार, कथाओं के लेखक डॉ. शर्मा कई ट्रस्टों के सचिव और कई अलंकरण समारोह के संयोजक के रूप में भी कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। वे अहमदाबाद स्थित इंस्टिट्यूट ऑफ निरमा यूनिवर्सिटी से भी जुड़े हुए हैं।

डॉ. चौहान स्टार 2020 सर्टिफिकेट से सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंदन ने उदयपुर के हॉस्पिटैलिटी, निजी सुरक्षा क्षेत्र व समाजसेवी डॉ. पृथ्वीराज चौहान को गत 18 वर्षों से किए जा रहे सेवा कार्यों के फलस्वरूप स्टार 2020 सर्टिफिकेट से सम्मानित किया। चौहान 18 वर्षों से हॉस्पिटैलिटी व समाज हित में कार्य कर रहे हैं। कोविड-19 महामारी में

लोगों को घर पहुंचाने, जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री, आयुर्वेदिक दवाई वितरण की सेवा को देखते हुए यह सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

चौहान की यह सभी जानकारी वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड को उपलब्ध कराई गई। उल्लेखनीय है कि वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड द्वारा 100 समाजसेवियों को सर्टिफिकेट प्रदान किए जाएंगे। इस संस्थान में हाल ही में रतन टाटा को भामाशाह के रूप में और अमिताभ बच्चन को सकारात्मक प्रचार के लिए ऑनलाइन सर्टिफिकेट प्रदान किया।

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोन एवं फैक्स : 0294-2492440

E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

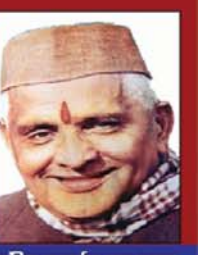

पंडित जनार्दन राय नागर संस्थापक

प्रवेश प्रारम्भ-2020-21

पंडित जनार्दन राय नागर की 109 वीं जयंती

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय : फोनः 0294-2413029, 2410776, मोः 9829160606

•बी.ए.: अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, पर्यावरण विज्ञान,ज्योतिष, संगीत •एम.ए. : अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, संगीत •एम.फिल •डिप्लोमा कोर्सेज : डिप्लोमा इन म्युजिक (सुरमल्हार) •पी.जी. डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेन्सिंग •बैचलर ऑफ जर्नलिस्म एण्ड मास कम्युनिकेशन •सर्टिफिकेट कोर्सेज : स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिशियन्सी इन इंग्लिश एण्ड कम्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मैथड्स एण्ड डाटा एनालिस्ट, ह्यूमन राईट्स, एम.एससी.इन जी.आई.एस.

वाणिज्य संकायः फोन : 0294-2413029, 2410776, मोः 9460275655

•बी.कॉम. •बी.बी.ए. •एम.कॉम. : लेखांकन, व्यावसायिक प्रशासन •एम.आई.बी. •एम.फिल. •मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट •पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट •सर्टिफिकेट कोर्सेज : प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मैन्युफैक्चरिंग स्किल्स,टैली ई.आर.पी.9.0, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (GST)

Faculty of Education

B.A. B.Ed/ B.Sc. B. Ed. (Four Year Integrated Course) Mob. 9460693771

फैकल्टी ऑफ कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंफोरमेशन टेक्नोलॉजी

(फोन : 2494227, 2494217, मोबाइलः 9887285752)

•MCA •M.Sc. (Computer Science) •PGDCA •BCA

Department of Pharmacy, मो. 9414869044

D. Pharm (Diploma in Pharmacy)

फैकल्टी ऑफ साइंस,फोन : 9461179656, 9461109371

•B.Sc. (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
•M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
•M.Sc. Mathematics, Physics, Botany and Zoology

ज्योतिष एवं वास्तु संस्थान मो. 9460030605

•एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान •डिप्लोमा ज्योतिष •डिप्लोमा वास्तु •प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्म काण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

सायंकालीन महाविद्यालय मो. 9829332300

बी.ए., बी.कॉम, एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एससी. (मनोविज्ञान) बी.लिब, एम.लिब, बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.एड (आर.सी.आई से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं कांउसलिंग, Master of Disaster Management

Department of Physical Education (Evening) Phone: 9352500445

•Diploma in Yoga •M.A. in Yoga •M.A. In Physical Education
•Diploma in Gym Instructor

Physical Education (शारीरिक शिक्षा) मोबाइल : 9829943205, 9352500445

•मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) •MA (YOGA Education)

डिपार्टमेन्ट ऑफ लॉ, मोबाइल 9414343363, 9928246547

•LL.B. •LL.M. (2 Years) •B.A.LL.B (5 Years) •PGDCL •PGDLFS •PGDLL

साहित्य संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज) (फोन 0294-2491054)

•M.A.. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
•PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग-राजस्थान विद्यापीठ टेक्नोलॉजी कॉलेज

मो.9829009878-9950304204 फोनः 0294-2490210

•Diploma in Engineering - सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग •Diploma in Engineering (तीन वर्षीय पाठ्यक्रम)

डिपार्टमेन्ट ऑफ फिजियोथैरेपी फोन : 0294-2656271 मो. 9414234293

•मास्टर ऑफ फिजियोथैरेपी •बेचलर ऑफ फिजियोथैरेपी
•PhD in physiotherapy •Fellowship in palliative care and oncology rehabiliatation •Fellowship in neurological rehabiliatation

उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क - फोन 0294-2491809- 9314696406

•MSW •पी.जी. डिप्लोमा-HRM •NGO मैनेजमेन्ट •Post Graduate Diploma in Rural Development (PGDRD)

डायरेक्ट्रेट ऑफ जनशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम (फोन : 2490723)

• DCA (Diploma in Computer Applications)
• PG Diploma In Police Science and Criminology

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, डबोक

• B.Sc. (Hons.) Agriculture (कृषि)

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन

लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डबोक (फोन : 0294-2655327, 2657753)

•M.Phil •M.Ed. •B.Ed. - M.Ed. Integrated.
•B.Ed. •B.Ed. (CD)
•B.A.B. Ed. / B. Sc. B.Ed. Four year integrated Course
•D.El.Ed.

कन्या महाविद्यालय, डबोक (फोनः 0294-2655327,मो. 9460856658, 9694881447)

•B.A.• B.Com.• B.Sc.• M.A. • M.Com • M.A. (Hindi, Pol. Sc., History, Geog, Sociology, Economics) • M.Com (Accountancy) • Special classes for English Speaking and Computer Basics • M.A in English Literature

आर.वी. होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, डबोक

(फोन : 0294-2655974, 2655975, मोबाईल : 09414156701, 09351343740)

• बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (BHMS)
• Diploma in Homoeopathic Pharmacy (2 years) course

फैकल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज (एफ.एम.एस.)

(फोनः 0294-2490632 मोः 9461260408, 9782049628)

• MBA • MHRM

Department of Travel, Tourism & Hospitality

Faculty of Management Studies 9950489333

Course Offired	Duration of Course	Eligiblity
BBA (Tourism & Travel) Specialisation in Hospitality	3 Years 1 Years	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Food & Bevrage Service)		12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Housekeeping)	1 Years	12th Pass in any stream

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

रजिस्ट्रार

ऑनलाइन प्रवेश और नई हाइब्रिड लर्निंग मॉडल की घोषणा

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। मारवाड़ी विश्वविद्यालय ने कोविड-19 महामारी की चुनौतियों से मुकाबले की सुदृढ़ भावना का परिचय देते हुए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू करने की घोषणा की। यह विश्वविद्यालय बीई, एमबीए, बीसीए, बीबीए, एमसीए, बी कॉम आदि अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन करता है। विश्वविद्यालय ने पूरी प्रवेश प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। विश्वविद्यालय ने हाइब्रिड मॉडल को अपनाया है और नए बैच सख्त सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों का पालन करते हुए संचालित होंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. वाई पी कोस्टा ने कहा कि हम विज्ञान, वाणिज्य और मानविकी के विभिन्न क्षेत्रों में 32 से अधिक पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं।

टाटा मोटर्स का 'कीज टु सेफ्टी' पैकेज

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। टाटा मोटर्स ने उदयपुर में अपने डीलर पार्टनर्स, चम्बल मोटोकॉर्प और शेखावटी मोटर्स के साथ मिलकर उपभोक्ताओं को अपना 'कीज टु सेफ्टी' पैकेज प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया है। यह ऑफर्स का एक संपूर्ण पैकेज है जोकि कंपनी के सभी यात्री वाहनों पर लागू होता है। इसमें हैचबैक, सेडान और एसयूवी जैसे टियागो, टिगोर, नेक्सन और हैरियर जैसे वाहन शामिल हैं। इसके तहत आसान फाइनेंसिंग के कई विकल्प, किफायती ईएमआई, लंबी अवधि के लोन शामिल हैं। इसके अलावा इस पैकेज को डिजाइन करने का लक्ष्य स्वास्थ्य रक्षा, सार्वजनिक सेवाओं और आवश्यक सामान की आपूर्ति के लिए अग्रिम मोर्चे पर डटे कोरोना वॉरियर्स को विशेष ऑफर प्रदान करना है।

15,342 मृत्यु दावों का निपटान किया

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। मैक्स लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लि. ने वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान 563 करोड़ रुपये मूल्य के 15,342 मृत्यु बीमा दावों का निपटान कर 99.22 फीसदी का सर्वकालिक व्यक्तिगत मृत्यु दावा-भुगतान अनुपात हासिल किया है।

मैक्स लाइफ के मैनेजिंग डायरेक्टर व चीफ एग्ज़ीक्यूटिव ऑफिसर प्रशांत त्रिपाठी ने कहा कियह अनुपात कंपनी के पिछले पांच साल के दौरान सर्वाधिक है और यह मैक्स लाइफ का नया 'भरोसे का नंबर' भी बन गया है। कंपनी ने लगातार पिछले पांच साल के दौरान अपना दावा-भुगतान अनुपात सुधारने पर काम किया और परिणामस्वरूप इस वित्त वर्ष में 99 फीसदी का आंकड़ा पार करने में सफल रही और यह ग्राहकों का भरोसा मज़बूत करने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अमेज़न इंडिया द्वारा सिंगल-यूज़ प्लास्टिक बंद

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। अमेज़न इंडिया ने भारत में अपने 50 से ज्यादा फुलफिलमेंट सेंटर्स से पैकेजिंग में उपयोग आने वाली सभी सिंगल-यूज़ प्लास्टिक को हटाने की घोषणा की है। इस तरह कंपनी ने स्थायित्वपूर्ण विकास की दिशा में अपने प्रयासों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। सितंबर 2019 में कंपनी ने पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखला बनाने के प्रयास के तहत इस लक्ष्य को जून 2020 तक की समय सीमा में पूरा करने का संकल्प लिया था। अमेज़न इंडिया में कस्टमर फुलफिलमेंट व सप्लाई चेन के डायरेक्टर प्रकाश कुमार दत्त ने कहा कि अमेज़न इंडिया ने अपने स्वयं के आपूर्ति नेटवर्क में सिंगल-यूज प्लास्टिक को पूरी तरह से हटाने की दिशा में कई कदम उठाए हैं।

बोन कैंसर का सफल ऑपरेशन

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। पारस जे.के. हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने घुटने के बोन कैंसर का सफल ऑपरेशन कर मरीज को फिर से चलने फिरने लायक बनाया है। हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण रोग विशेषज्ञ डॉ. आशिष सिंघल ने बताया कि 32 वर्षीय युवक को 14 वर्ष पूर्व बांये पैर में बोन कैंसर हुआ था। उस दौरान ऑपरेशन से कैंसर वाली हड्डी को निकालकर कृत्रिम प्रोसथेसिस लगाकर मरीज़ को चलने फिरने के काबिल बनाया गया लेकिन पिछले एक साल से मरीज के पांव में दुबारा से तकलीफ होने लगी। परिजनों ने उसे कई बड़े अस्पतालों में दिखाया लेकिन सभी ने दुबारा ऑपरेशन को जोखिम भरा बताया।

इस पर परिजन मरीज को पारस जे. के. हॉस्पिटल में लेकर आए। यहां डॉ. सिंघल ने मरीज की जांच के बाद मैगा ट्यूमर प्रोसथेसिस करने का निश्चय किया और ऑपरेशन के अगले ही दिन मरीज को अपने पैरों पर चलाया। मरीज अब पूर्ण रुप से स्वस्थ है, और अपने सभी काम बिना किसी सहारे से कर रहा है।

अदनान टॉप-25 फ्यूचर प्लेअर्स की सूची में शामिल

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। गत वर्ष आयोजित सुब्रतो कप यू-17 इंटरनेशनल फुटबाल टूर्नामेंट में शानदार खेल दिखाने वाले जिंक फुटबाल अकादमी के कप्तान

मोहम्मद अदनान ने राष्ट्रीय सुब्रतो कमिटि का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। अदनान ने अपनी कप्तानी के दम पर गोवा, तमिलनाडु, चंडीगढ़ और उपविजेता अफगानिस्तान जैसी टीमों के खिलाफ अगुवाई की थी जिस कारण हिंदुस्तान जिंक की फुटबाल टीम इस टूर्नामेंट को यादगार बनाने में सफल रही थी।

सुब्रतो कमिटि ने पूरे टूर्नामेंट में अदनान के शानदार खेल से प्रभावित होकर उन्हें देश के टॉप-25 फ्यूचर प्लेअर्स की सूची में शामिल किया है। सुब्रतो मुखर्जी स्पोर्टस एजुकेशन सोसाइटी की ओर से 25 हजार रुपये की स्कालरशिप राशि का चेक प्रदान किया गया।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि हमें कप्तान अदनान और पूरी टीम पर गर्व है। दो साल पहले इस क्लब की स्थापना के बाद से हमने इसे लेकर जितने भी प्रयास किए हैं, उनका परिणाम शानदार है और हमें यकीन है कि हम अपने प्रदर्शन के दम पर आने वाले समय में भी कई पुरस्कार और सम्मान हासिल करने में सफल होंगे।

788 करोड़ का बोनस घोषित

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने अपने प्रोडक्ट्स के लिए कुल 788 करोड़ के बोनस की घोषणा की है। यह बोनस कंपनी के पार्टिसिपेटिंग पॉलिसीधारकों के फंड द्वारा उत्पन्न मुनाफे का हिस्सा है। 31 मार्च, 2020 तक सभी पार्टिसिपेटिंग पॉलिसियां इस बोनस को प्राप्त करने के लिए योग्य हैं, जो कि उनके गारंटीकृत परिपक्वता या मृत्यु लाभ में जोड़ा जाएगा। यह लगातार 14वां वर्ष है जब कंपनी ने बोनस घोषित किया है और पॉलिसीधारकों को दीर्घकालिक मूल्य प्रदान किया है। वित्तीय वर्ष 2020 के लिए घोषित बोनस पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक है, और इस तरह कंपनी के 9 लाख पॉलिसीधारक अपने दीर्घकालिक वित्तीय बचत लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ते हैं।

अमेजन पैंट्री सर्विस का 300 शहरों में विस्तार

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। अमेजन ने अपनी लोकप्रिय सेवा 'अमेजन पैंट्री के विस्तार की घोषणा की। यह सेवा देशभर के 300 से अधिक शहरों में उपलब्ध है। उदयपुर, अलवर, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चुरू, गंगानगर, हनुमानगढ़, झालावाड़, नागौर, पाली, सवाई माधोपुर और सीकर सहित अन्य शहरों में उपभोक्ता अब घर बैठे आसानी से अमेजन पैंट्री के जरिये राशन खरीद सकते हैं।

सौरभ श्रीवास्तव, डायरेक्टर, कैटेगरी मैनेजमेंट, अमेजन इंडिया ने कहा कि अमेजन पैंट्री के साथ उपभोक्ता आकर्षक कीमत पर ग्रॉसरी और दैनिक आवश्यकता वाली वस्तुओं को खरीद पर मासिक 35 प्रतिशत तक की बचत कर सकते हैं। वे 200 से अधिक ब्रांड्स के 3000 उत्पादों में से चुनाव कर केवल 1-2 दिन में डिलवरी अपने घर पर प्राप्त कर सकते हैं।

श्रीवास्तव ने कहा कि अमेजन में, हम उपभोक्ताओं के लिए 'एवरीथिंग' और 'एवरीडे ' मार्केटप्लेस बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पूरे देश में सिलेक्शन, कन्वीनिएंस, ईज और फास्ट डिलीवरी का विस्तार करने पर निरंतर ध्यान दे रहे हैं। अमेजन पैंट्री सर्विस अब 10,000 से अधिक पिन कोड में उपलब्ध होगी।

विद्यापीठ के तीनों परिसर में चलेगा कैच द रेन अभियान : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विवि) उदयपुर की ओर से विद्यापीठ के तीनों परिसर केन्द्रीय यूनिट, प्रतापनगर सरस्वती यूनिट, टाउन हॉल, पंचायतन यूनिट, डबोक के समस्त विभागों में केच द रेन अभियान चलेगा।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि राष्ट्रीय जल मिशन द्वारा चलाये जा रहे अभियान तथा यूजीसी के निर्देशानुसार पानी को संरक्षित करने, कचरे को कम करने का कार्य किया जायेगा। सभी परिसरों में पानी संरक्षित करने हेतु तथा भूमिगत जल में वृद्धि करने रेन वाटर हार्वेस्टिंग का कार्य शुरू किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ियों के लिए हमें अभी से भूमिगत जल स्त्रोत बढ़ाना होगा। पर्यावरण संकट को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में इस तरह समावेशित किया जाये जिससे समाज में पर्यावरण के प्रति एक अनुकुल वातावरण तैयार हो सके।

ज़िंक ने सीवेज ट्रीटमेंट संयंत्रों की क्षमता बढ़ाकर 55 एमएलडी की

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। हिन्दुस्तान ज़िंक ने शहर में अपने नए 10 मीलियन लीटर्स प्रतिदिन (एमएलडी) सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट को चालू कर दिया है। इस नए संयंत्र से हिन्दुस्तान ज़िंक के सीवेज ट्रीटमेंट संयंत्रों की कुल क्षमता 55 एमएलडी हो गई है।

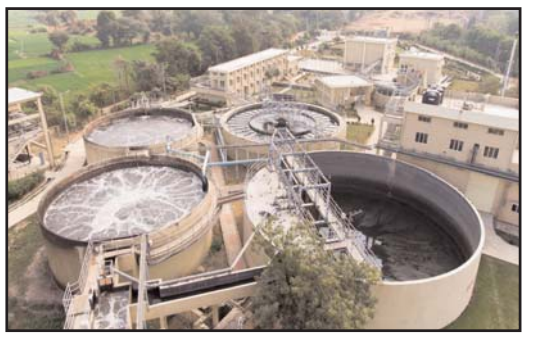

हिन्दुस्तान ज़िंक और वेदांता लिमिटेड के सीईओ सुनील दुग्गल ने कहा कि उदयपुर में रोजाना 70 एमएलडी सीवेज उत्पन्न होता है। ज़िंक एक अतिरिक्त 5 एमएलडी प्लांट की कमिशनिंग के अंतिम चरण में है, जिसके बाद सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की कुल क्षमता 60 एमएलडी हो जाएगी। इसके बाद उदयपुर शहर के लगभग पूरे सीवेज का ट्रीटमेंट हो पाएगा।

उन्होंने कहा कि 2014 में हमने उदयपुर का पहला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किया था। सरकारी-निजी भागीदारी मॉडल के तहत 20 एमएलडी क्षमता का यह संयंत्र लगाया गया। बीते 6 वर्षों के दौरान हम इस क्षमता को तिगुना करने की दिशा में आगे बढ़ते आए हैं। यह अत्याधुनिक 10 एमएलडी प्लांट हमारी कोशिशों को और बढ़ावा देगा जिनके द्वारा हम एक स्वच्छता एवं वाटर पॉजिटिव शहर बनाने के सपने को हकीकत में बदलना चाहते हैं।

उदयपुर म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के कमिश्नर अंकितकुमार सिंह, आईएएस ने कहा कि ज़िंक ने अनुबंध के मुताबिक तय समय में 10 एमएलडी क्षमता वाले प्लांट समेत उदयपुर शहर में 55 एमएलडी सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का कार्य पूरा कर दिखाया है। उन्होंने कहा कि सभी सामाजिक विकास परियोजनाओं के लिए वेदांता की हिन्दुस्तान ज़िंक हमेशा से उदयपुर म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन की प्रमुख सहयोगी रही है और उन्होंने जो भी प्रयास किए हैं उनके लिए हम धन्यवाद करते हैं।

पगड़ी बांधक छाबदार.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

सावण सुदी (शुक्ल पक्ष) तीज (तृतीया) को लोड़ी (छोटी) तीज पर गुलाबी रंगी लहरिया पगड़ी पहनते। लहरिया लहर जैसी भांत लिये बारीक सफेद या हरिया (हरा) रंग होता। भाद्र सुदी तीज यानी बड़ी अथवा काजली तीज पर काली तथा सफेद पट्टी वाली पाग पर सोने जैसी छपाई धनक (धनुष) भांत वाली पगड़ी, लाल-सफेद मिश्रण वाली राजशाही, दशहरे पर सामन्ती लोग सलमा सितारों वाली पाग, शिकारी सवारी में महाराणा के साथ गहरे भूरे या हरे रंग की पगड़ी धारण होती जो शिकारी रंग की पगड़ी कहलाती।

इसी प्रकार गणगौर की सवारी में महाराणा और सभी सामन्त-जागीरदार कसुमल यानी लाल, सुवापंखी यानी तोते के पंख जैसी, गुलाबी या फिर केसरिया रंग की पगड़ी तथा पोशाक पहनते। बसंत पंचमी पर छींट वाली पगड़ी पहनी जाती। इसमें कसरिया या फिर नींबू रंगी पगड़ी पर गुलाबी रंग के छींटे दिये होते। होली पर पीली या गहरी लाल कसुमल रंगी पगड़ी, गर्मी में सुवापंखी, सर्दी में कसुंबी (लाल), युद्ध के दौरान शौर्य एवं बलिदान की प्रतीक केसरिया पगड़ी रहती।

तिरंग अर्थात् तीन रंग वाली पगड़ी में लाल, नारंगी, श्वेत, पंचरंग अर्थात् पांच रंग वाली पगड़ी में बैंगनी, हरा, पीला, नीला तथा लाल रंग तथा सतरंग अर्थात् सात रंग वाली पगड़ी में इन पांच रंगों के अलावा आसमानी और नारंगी रंग और होते। शोकसूचक रंगों में भूरा यानी मलागरी, नीला, कबूतरी तथा सफेद रंग गिने जाते हैं।

मेवाड़ में हाथ कते सूत, मोटे सूत की और महीन कते सूत रेजे की पगड़ी का चलन था जो बलाई जाति द्वारा बनाई जाती। उसके बाद मिल द्वारा बनी पगड़ियां आईं। मलमल तथा रेशम की भी पगड़ियां होतीं जो बाहर से आती। ढाका (बांगलादेश) की अत्यंत बारीक मुलमुल की पगड़ियां भी भगवानजी ने देखीं जो बहुत कीमती होतीं।

पगड़ी वस्तुत: प्रत्येक मनुष्य की ओपमा रही है। शरीर के अंगों में सबसे बड़ा सिर और पहनावे में सबसे बड़ी पगड़ी रही है। इस पगड़ी ने ही मनुष्य को एक विशेष प्रकार की मर्यादा, प्रतिष्ठा, गरिमा, पैठ, पाया, साख और स्वाभिमान दिया है। रंगरेज द्वारा ये पगड़ियां मोत्यां, अंगूरी, सरबती, लाल, नाखूनी, पिस्ताई, सुवापंखी, अधरंग, केसरिया, जामुनिया आदि रंगों में रंगी जातीं।

सामान्य जीवन की पगड़ियां उतनी कीमती नहीं होतीं। उनका बंधेज भी सीधासाधा होता। इन पगड़ियों से सम्बन्धित कई मुहावरे भी प्रचलित हैं जो इनके महत्त्व के परिचायक हैं। यथा- पगड़ी बांधना, पगड़ी बंधना, पगड़ी उतारना, पगड़ी उतरना, पगड़ी उछालना, पगड़ी उछलना, पगड़ी रखना, पगड़ी बदलना, पगड़ी अटकना आदि।

राणाजी के राज में प्रत्येक व्यक्ति को पगड़ी पहनना आवश्यक था। बिना पगड़ी धारक अपने को अशिष्ट तथा अपमानित महसूस करता। महलों में तो पगड़ी बिना प्रवेश ही वर्जित था। शुभ मौकों पर खुला सिर अशुभ तथा अमंगल माना जाता। घर आये अतिथि का पगड़ी पहना सम्मान-सत्कार किया जाता। यों प्रत्येक जाति में सामाजिक अवसरों पर पाग भेजने, ले जाने का रिवाज रहा।

पगड़ी के और भी किस्से हैं जो उसके महत्त्व के परिचायक हैं। एक किस्सा गिरनार के राजा कैवाट का है जो अपनी अनमी पगड़ी के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एकबार मंगल नामक भाट ने उसके दरबार में पहुंच काव्य-रचना द्वारा उसकी विरूदावली की। इससे राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और कुछ मांगने को कहा। भाट ने कैवाट की पगड़ी मांगली तब राजा बोला, 'मेरी पगड़ी सदैव अनमी रही है। कभी नहीं झूकी और तुम्हें अपने शुभराज द्वारा हर जगह झुकना पड़ेगा।' भाट बोला, 'इसे पहन मैं न कभी रामरमी करूंगा और न झुकूंगा।'

यह खबर जब कोयलापट्टन के राजा अणतराव सांखला को लगी तो उसने भाट को भरे दरबार में बुलवाया जहां राजा के खम्मा के फटकारे लग रहे थे। यह देख भाट अपनी सुधबुध खो बैठा। उसने मुजरे के लिए अपना सिर तो झुकाया पर पगड़ी की लाज बची रही। उसकी पगड़ी झुकने के बजाय अधर में ही रह गई।

एक खबर के अनुसार उदयपुर में 16 मार्च 1975 को हुए एक सामूहिक विवाह में 83 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे पर एक दूल्हा तैयबअली ने यथा समय नहीं पहुंचने के कारण कुवैत से पगड़ी भेज दी तब काजी ने उसके साथ दुल्हन शकीना अतरवाला का विवाह करा दिया। ऐसे और भी उदाहरण मिलते हैं।

वर्तमान कोरोना काल में तो विदेश में नौकरी कर रहे वर से वधू ने ओनलाइन विवाह कर लिया।

पगड़ी ने समय-समय पर कई कमाल दिखाये। पाली में एक ग्रामीण बैंक खुलने पर वहां के रामाराव ने अपनी पगड़ी की गांठ खोल इक्कीस हजार रूपये निकाल खाता खुलवाया तो लोग चकित रह गये। रामाराव ने कहा कि तिजोरी में लक्ष्मी के कैद होने से उसका दम घुटता है। पगड़ी से दुश्मन को बांध उसकी पिटाई करने तथा आड़े वक्त अपनी प्यास बुझाने की हिम्मत दिखाने के साहसी किस्से भी कई हैं।

कागज आयात पर हो शुल्क में बढ़ोतरी : ए. एस. मेहता

उदयपुर (का. सं.)। इंडियन पेपर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईपीएमए) के अध्यक्ष ए. एस. मेहता ने कहा कि ज्यादा घरेलू उत्पादन क्षमता वाले चीन और इण्डोनेशिया जैसे देश मौके का फायदा उठा रहे हैं और अपना अतिरिक्त कागज बहुत कम कीमत में भारत में बेच रहे हैं। इससे भारत में पहले से ही दबाव में चल रहे कई पेपर मिल के लिए अपना संचालन मुश्किल हो गया है। इससे न सिर्फ सरकार को राजस्व का नुकसान होगा बल्कि हजारों लोगों की आय और रोजगार पर भी दुष्प्रभाव पड़ेगा। इनमें खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के किसान शामिल हैं जो कृषि वानिकी से जुड़े हैं और कागज उद्योग को लकड़ी की आपूर्ति करते हैं।

श्री मेहता ने कागज के आयात पर शुल्क 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 25 प्रतिशत करने की अपील करते हुए कहा कि कोरोना वायरस के संक्रमण के फैलने के बाद पेपर उद्योग की पूरी सप्लाई चैन बाधित हो गई है। लॉकडाउन से राहत के बाद भी सप्लाई चेन पूरी तरह सामान्य नहीं हो पाई है लेकिन घरेलू उद्योगों की खराब हालत का फायदा उठाते हुए हाल के दिनों में कागज के आयात में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। कोविड-19 के बाद मांग कम होने के कारण भारतीय कागज उद्योग बेहद चुनौतीपूर्ण माहौल में काम कर रहा है। वहीं काफी कम कीमत पर कागज के बढ़ते आयात ने इस चुनौती को और बढ़ा दिया है।

महासचिव रोहित पंडित ने कहा कि पिछले लगभग एक दशक से देश में शून्य या बहुत कम आयात शुल्क के कारण राइटिंग एवं प्रिंटिंग कागज सेग्मेंट पर बेहताशा आयात के कारण बहुत दुष्प्रभाव पड़ा। कई छोटे पेपर मिल और यहां तक कि कुछ बड़े मिल भी घाटे के कारण बन्द हो गए। देश में कागज उत्पादन की पर्याप्त क्षमता है जिसका पूरा इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है।

दो वर्षीय बच्चे का लीवर प्रत्यारोपण

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। विरासत से मिली लीवर की घातक बीमारी से पीड़ित दो वर्षीय हिरवा का अहमदाबाद के सीम्स अस्पताल मे लीवर प्रत्यारोपण किया गया। उसकी मां ने ही अपना लीवर देकर उसे जीवनदान दिया। हिरवा के पिता आटो-चालक हैं और इलाज का खर्च भी नही उठा सकते थे। लीवर प्रत्यारोपण की टीम का नेतृत्व डॉ. बीसी राय से सम्मानित डॉ. आनंद खखर ने किया।

सीम्स अस्पताल के चेयरमैन डॉ. केयूर परीख ने बताया कि इस सर्जरी के बाद हिरवा धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहा है। मैं सीम्स फाउंडेशन, मिलाप, हिरवा की मां और स्वैच्छिक रक्तदाताओं का आभार व्यक्त करता हूँ। डॉ. केयूर परीख ने बताया कि ट्रांसप्लांट टीम में डॉ. गौरव पटेल, डॉ. अमित चितलिया, डॉ. हिमांशु शर्मा, डॉ. प्राची ब्रह्मभट्ट, प्रफुल्ल अचार, एनेस्थेटिस्ट डॉ. निरेन भवसार एवं डॉ. दीपक देसाई शामिल थे।

ट्रांसप्लांट टीम के निदेशक डॉ. धीरेन शाह ने कहा कि हम जयंती रवि और डॉ. राघवेन्द्र दीक्षित के आभारी हैं, जिन्होंने कोविड जैसी परिस्थिति में स्वीकृति प्रदान की।

कृत्रिम अंग पहन कैसे चलें विषयक वेबिनार

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। नारायण सेवा संस्थान में दुर्घटना में अंग खो चुके दिव्यांगजन कृत्रिम अंग पहनकर कैसे चलें विषय पर प्रशिक्षण वेबिनार का आयोजन किया गया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि वेबिनार में 1100 दिव्यांगों ने ऑनलाइन हिस्सा लिया। आर्थोटिस्ट एंड प्रोस्थोटिस्ट डॉ. मानसरंजन साहू और डॉ. नेहा अग्निहोत्री ने वेबिनार में प्रशिक्षण के दौरान कहा कि दुर्घटना से प्रभावित दिव्यांग को प्रोस्थेटिक फिटिंग होने के बाद डॉक्टर की देखरेख में ही चलने की ट्रेनिंग लेनी चाहिए अन्यथा मांसपेशियों पर विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है। वर्तमान में संस्थान प्रतिदिन 10 से 12 अंगविहीन जन को नि:शुल्क कृत्रिम अंग वितरण कर रहा है।

'ई-किसान धन' ऐप लॉन्च

उदयपुर, (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने किसानों के लिए 'ई-किसान धन' ऐप लॉन्च किया है। यह ऐप उनके मोबाईल पर कृषि एवं बैंकिंग सेवाओं का संग्रह प्रदान करेगा। यह ऐप कृषि गतिविधियों में संलग्न लोगों के लिए ज्ञान व जानकारी के भंडार के रूप में काम करेगा और ग्रामीण परिवेश की जरूरतों को पूरा करने में मदद करेगा।

राजिंदर बब्बर, हेड, रूरल बैंकिंग ग्रुप, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि यह ऐप वैल्यू एडेड सेवाएं, जैसे मंडी के मूल्य, खेती की नवीनतम खबरें, मौसम का पूर्वानुमान, बीज की किस्मों की जानकारी, एसएमएस एडवाईज़री, ई-पशुहाट, किसान टीवी आदि अनेक सेवाएं प्रदान करेगा। ग्राहक विविध बैंकिंग सेवाएं, जैसे लोन लेना, बैंक खाता खुलवाना, इंश्योरेंस की सुविधा प्राप्त करना, केसीसी लोन की पात्रता ऑनलाईन देखना एवं सरकारी सोशल सिक्योरिटी की योजनाएं प्राप्त करने जैसी अनेक सेवाओं का लाभ अपनी उंगलियों पर ले सकेंगे। यह ऐप पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं, जैसे लोन के लिए आवेदन करने, फिक्स्ड डिपॉज़िट, रिकरिंग डिपॉज़िट और सेविंग्स अकाउंट खुलवाने में भी मदद करेगा। इसके अलावा ग्राहक ऐप पर एक फॉर्म भर सकेंगे, जिसके बाद एक रिलेशनशिप मैनेजर उनसे संपर्क कर उन्हें अन्य औपचारिकताएं पूरी करने में मदद करेगा। इससे सरकारी योजनाओं एवं उन योजनाओं का लाभ उठाने के तरीकों के बारे में जानकारी पाते रहने में मदद मिलेगी।

नन्दवाना स्मृति सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित

चित्तौड़गढ़, (विज्ञप्ति)। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत संस्थान 'संभावना' ने अपने संरक्षक और सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना के नाम पर दिए जाने वाले वार्षिक सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की हैं।

संभावना संस्थान के अध्यक्ष डॉ. के. सी. शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर के इस सम्मान में स्वतंत्रता आंदोलन, प्राच्य विद्या या भारतीय मध्यकालीन साहित्य से सम्बंधित किसी एक कृति को चुना जाएगा। सम्मान में ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र और शॉल भेंट किये जाते हैं। प्रविष्टियां डॉ. कनक जैन को 30 जुलाई 2020 तक भिजवाई जा सकेंगी।

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग (5)

पिछले अंक में राजस्थान में प्रचलित विवाह सम्बन्धी विविध संस्कारों एवं लोकाचारों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई थी। यहां पढ़िये उससे आगे-

(29) पडरा भेजना :

पडरा वर द्वारा वधू को भेजा जाता है। बांस की बनी मोटी छाब में वधू के दो वेश जिसमें एक घाट घाघरा तथा लीला कोरपल्लेवाला लाल साड़ी का घाट होता है। घाट के अंदर की भांत में डबूकड़े होते हैं। घाघरा लाल टूल का होता है। इसके अलावा मेंहदी का पाला, लच्छा, कंकू, डाळां (लाख की दो चूड़ियां) दोवड़ा (आसमानी रंग की चीणों का पांच लड़ी गले का आभूषण जिसे चौथे फेरे में बहिन पहनाती है), गले में बांधने का सींग बीजासण (लच्छे में चांदी के पतरड़े की 7 पुतलयां), चोटी के बांधने का फूंदा, पहनने की चमकणी जूतियां भेजी जाती हैं। इसके अलावा एक चूंदड़ भेजी जाती है जिसे मामा चौथे फेरे में ओढ़ाता है। हाथीदांत का डाडा होता है जिसे कोहनी के ऊपर वर की बहिन-भुवा पहनाने का दस्तूर करती है और बदले में नेग प्राप्त करती है।

(30) कन्यावर :

विवाह के दिन कन्या (विवाहिता) के माता-पिता, भाई एकासना व्रत करते हैं जो कन्यावर के नाम से जाना जाता है। यह कन्या को वर की प्राप्ति होने के उपलक्ष्य में किया जाता है। इस दिन केवल एक बार दिन को भोजन किया जाता है। इस व्रत में केवल सिंघाड़े के आटे का बना हलुआ बनाया जाता है जो दही के साथ खाया जाता है। विवाह में आये अन्य सगे-समधियों को भी यह व्रत करने को कहा जाता है पर अन्यों की मनोभावना होने पर ही वे यह व्रत करते हैं।

(31) अंतरवास्या :

यह दो मीटर के करीब लंबाई लिए लाल कपड़ा होता है। शादी के वक्त इसका एक हिस्सा वींद अपने कंधे पर रखता है जबकि दूसरे हिस्से से वधू की चूंदड़ का पल्ला

बांधा जता है। अंतरवास्या वींद-वींदणी की अंतरंगता का सूचक है। दोनों आत्मीय रूप से एक दूसरे के लिए अंतरंगी हो गये हैं।

(32) कामण करना :

तोरण पर आये बना का स्वागत करते समय सासू कामण करती है। कामण से तात्पर्य वह क्रिया होती है जिससे दूल्हे को वशीभूत किया जाता है। वहीं सासू उसकी लंबाई कच्चे सूत अथवा लच्छे से नापती है। कहीं तिलक निकाल उसका नाक पकड़ा जाता है लेकिन दूल्हा बड़ी सावधानी तथा स्फूर्ति रखता है। सासू को ये क्रियाएं नहीं करने दी जाती हैं। साथ वाली महिलाएं मसखरी के माहौल में गीत गाती हैं-

(क)

कोरी-कोरी कुलड़ी में मइड़ो जमायो राज
आज म्हारा राईवर ने दादासा घर नूत्या ओ राज
दादासा घर नूत्या राईवर दाद्यां नूत जिमाया राज
लीली दगली लीलो सूत बांधोजी सासू रा पूत
बांध्या सूंद्या करे सलाम
एक सलाम भाई दूसरो सलाम
तीसरो सलाम थांका बाप री गुलाम
छोड़ ए दादासा री प्यारी
अब तो कामण कीधा ओ राज
कामण का तो पैली केता अब तो थांका चाकर राज।

अर्थात् कोरे कुल्हड़ में दही जमाया। आज मेरे बनड़े को दादासा के घर आमंत्रित कर जीमाया है। दादियों ने जीमाया है। हरे सूत से बने राजा को बांधो। वह सबको सलाम करेगा। तीसरे सलाम में बाई का गुलाम हो जायेगा।

(ख)

दादासा रा मेलां नीचे बनड़ी हंस उड़ावे सा
बनड़ी हंस उड़ावे वांकी माता कामण गावे सा
पाव की पंसेरी बनाई दूं कागज का दो पलड़ा सा
मंडप नीचे तोल लगाई दूं जान्या ने तुलवा दो सा
बारा मण को बामण उतर्‌यो, बीस मण को नाई सा
तीस मण का देवर उतर्‌या अस्सी मण का जेठ सा
सौ मण का ब्याईजी उतर्‌या कुसुमबाई सुरसा सा
बनी का बना सा ने तोल्या फूल बराबर उतर्‌या सा।

अर्थात् दादासा के महल के नीचे बनी हंस उड़ा रही है। उसकी माता कामण गा रही है। पांव की पंसेरी बना दूं। कागज के दो पलड़े भर दूं। मंडप के नीचे बरातियों को तुलवा दूं। बारह मण का ब्राह्मण, बीस मण का नाई, तीस मण का देवर, अस्सी मण का जेठ, सौ मण का ब्याई पर बनी के बना का तोल मात्र फूल बराबर रहा।

(स)

म्हारी जोड़ी रा बनड़ा पे कामण कणी कीधा
म्हारे रेशम रे फूंदा पर कामण कणी कीधा।

अर्थात् मेरी जोड़ी के बनड़े पर किसने कामण किया? मेरे रेशम के फूंदे पर किसने कामण किया?

(द)

बना बागां आय बिराजिया ओ
गज कामणिया
म्हारो माली वींद सरायोजी।
चालता री चाल बांधूं
देखता रा नैण बांधूं
घोड़ी चढ़तो वींद बांधूं
वींद का वड़ वीर बांधूं
बांधूं सारो कटंब कबीलो ए गज कामणिया।

अर्थात् बना ने बाग में आकर विश्राम किया। मेरे माली ने उसे सराहा। चलते हुए की चाल, देखते हुए के नयन, घोड़ी चढ़ते दूल्हे, दूल्हे के बड़े भाई और उसके सारे कुटुंब-परिजनों को बांध दूं।

कामण गीत बड़ा गूढ़ अर्थ लिए होते हैं। गीतों में कामण का जादुई प्रभाव अभिव्यंजित हुआ मिलता है। यह गीतों की ही शक्ति होती है कि उस कामण के प्रभाव को भी दशार्या जाता है। विवाहिता बाई तथा उसके परिजनों के वश में दूल्हा हो जाय। महिलाएं कहती भी हैं कि शादी के पश्चात दूल्हा जोरू का गुलाम बना रहता है और दुल्हन के परिवार की ओर ही उसका झुकाव अधिक देखा जाता है।

कुछ गीत तो ऐसे भी मिलते हैं जिनसे यह पता चलता है कि वशीकरण के चलते पूरी बरात के भागीदारों को ही जादू में बांध लिया जाता है। हर बराती की चाल, उसकी दृष्टि, उसके कामकाज, दूल्हे को घोड़ी सहित ही नहीं, दूल्हे के सभी भाई, सगे समधी और पूरा कुटुम्ब परिवार ही बांध दिया जाता है ताकि विवाह निर्विघ्न समाप्त हो सके और वधू पक्ष के लोग शांतिपूर्ण विवाह रचाकर अपनी चाहनुसार बरातियों को विदा कर सकें।

(33) चूंदड़ ओढ़ना :

चूंदड़ सुहाग एवं सौभाग्य की निशानी है। ये चूंदड़ें कई प्रकार की होती हैं जिनमें केरी (आम) पुतली, मकई, ज्वार, फूल, चौकड़ी, डाबा, मोतीचूर, एक दाली भांत तथा काली एवं लाल चूंदड़ें विशेष प्रचलित हैं। चूंदड़ें प्राय: साड़ी के ऊपर ओढ़ी जाती हैं। सबसे पहले शादी के समय चंवरी में चूंदड़ धारण कराई जाती है। उसके बाद क्रमश: चूड़ा पहनते समय, माताजी पूजते समय, घूघरी बांटते, चाक लाते, झलमा पूजते, रोड़ी पूजते, भैरूजी पूजते, घोड़ी चढ़ाते, मुस्यारा पहनते, लाडू बांटते तथा आणा आते समय चूंदड़ ओढ़ी-पहनी जाती है।

जब कोई सधवा स्त्री मर जाती है तो उसे भी चूंदड़ ओढ़ाई जाती है। राजस्थानी लोकगीतों तथा पारसियों में इन चूंदड़ों के कई गीत तथा पारसियां मिलती हैं। राजस्थान में चूंदड़ें बनाने का काम पैतृक व्यवसाय के रूप में रंगरेज करते हैं। नमूनार्थ-

नानी बंधण री चूंदड़ी बेचां हाटूं जी हाट
चतर व्है तो मोल लै मूरख फिरि-फिरि जात। (पारसी)

अर्थात् छोटे-छोटे बूंदक वाली चूंदड़ी, बाजार-दर-बाजार बेची जाती है। चतुर व्यक्ति उसकी पहचान कर खरीद लेता है जबकि मूर्ख घूम फिर उसे देखता रह जाता है।

काली नदी रो पाणी न पीवूं
काला न बैंगन खावूं।
काला पिया री सेज न सोवूं
म्हें काली पड़ जाऊं
काली चूंदड़ ऊपर बालमो बोत राजी। (गीत)

अर्थात् काली चूंदड़ पर मेरा पति बहुत फिदा है। काली नदी का पानी नहीं पीऊंगी। काले बैंगन नहीं खाऊंगी। काले प्रियतम की शैय्या नहीं सोऊंगी। मैं काली पड़ जाऊंगी।

(34) हथलेवा जोड़ना :

हथलेवा जोड़ने से तात्पर्य वर-वधू दोनों के हाथ में रंगबंटाई वाली गीली मेंहदी रख उनके हाथ जोड़ दिये जाते हैं। वर का दाहिना हाथ नीचे रख कन्या का अंगूठा अंदर बंदकर हाथ ऊपर रखा जाता है और उन पर लाल कपड़ा लपेट दिया जाता है। यह क्रिया पाणिग्रहण कही जाती है। कहीं मेंहदी कन्या के हाथ पर रखने का प्रचलन

है। हथलेवा छुड़ाने के बाद दोनों का हाथ देख महिलाएं उनके बीच आपसी भावी मेलमिलाप का शकुन निरखती हैं। जैसी मेंहदी रचती है उसके अनुसार दोनों के बीच अच्छा प्रेम, गाढ़ा प्रेम अथवा हल्का प्रेम रहने का अर्थ निकाला जाता है।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।